Exchange & Finance Available
Zelo Electric Scooter
Maa Bhagwati Services & Enterprises
B. No. 23, Infront of IDBI Bank,
Neemuch 9407423966, 8770664866

मालवा फर्स्ट

MALWA FIRST

स्वाभिमान ही हमारा अभिमान है

Periodicity- Weekly

PRGI Reg. No. MPHIN/2023/90883

संपादक : ऐश्वर्य शर्मा

नीमच, बुधवार

08 जुलाई 2026

वर्ष - 04, अंक - 10 - मूल्य 02 रूपए

पृष्ठ - 04

E-mail: nmh.pawan@gmail.com

Contact: 9407423966, 8770664866

Commodity: Gold 1,51,905 Silver 2,95,000 Crude Oil 5,963 Natural Gas 302.20 Aluminium 232.30 Copper 827.35

नीमच में अध्यात्म का महाकुंभ : 11 जुलाई को पधारेंगे आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानंद जी महाराज, देश की नामचीन हस्तियों का लगेगा जमावड़ा

नीमच। मध्य प्रदेश की पावन और ऐतिहासिक नगरी नीमच में आगामी 11 जुलाई को एक नया आध्यात्मिक सवेरा होने जा रहा है। सनातन संस्कृति के ध्वजवाहक, परम शिव उपासक और निरंजनी अखाड़ा पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी श्री कैलाशानंद जी महाराज का नीमच की पुण्य धरा पर प्रथम बार भव्य आगमन हो रहा है। राष्ट्र उत्थान, सामाजिक कल्याण और विश्व शांति के पावन संकल्प के साथ आयोजित होने वाले इस एक दिवसीय भव्य आध्यात्मिक समागम को लेकर पूरे मालवा अंचल सहित देश भर के श्रद्धालुओं में अभूतपूर्व उत्साह का माहौल है।

यह ऐतिहासिक और अलौकिक धार्मिक महोत्सव शनिवार, 11 जुलाई 2026 को दोपहर 11 बजकर 45 मिनट से दोपहर 1 बजकर 45 मिनट तक टाउन हॉल, दशहरा मैदान के विशाल प्रांगण में आयोजित किया जाएगा।

इस पावन वेला में हरिद्वार की दक्षिण काली पीठ के स्वामी कैलाशानंद गिरि जी महाराज के मुखारविंद से प्रवाहित होने वाली ज्ञान गंगा और दिव्य प्रवचनों का श्रवण करने के लिए लाखों श्रद्धालुओं के जुटने की संभावना है। आयोजकों का मानना है कि संतों का सानिध्य मानव जीवन को एक नई दिशा, नई ऊर्जा और दिव्यता प्रदान करता है।

इस एक दिवसीय समागम की भव्यता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसमें केवल स्थानीय श्रद्धालु ही नहीं, बल्कि देश के कोने-कोने से वीवीआईपी अतिथियों का आगमन हो रहा है। कार्यक्रम में भारत सरकार के केंद्रीय मंत्री, विभिन्न राज्यों के कैबिनेट मंत्री, वरिष्ठ राजनेता, देश के नामचीन उद्योगपति और गणमान्य समाजसेवी विशेष रूप से शिरकत करेंगे। प्रशासन और आयोजक समिति द्वारा सुरक्षा और बैठक व्यवस्था के लिए व्यापक तैयारियां की जा रही हैं। पूरा टाउन हॉल और दशहरा मैदान क्षेत्र आध्यात्मिक रंग में रंगा जा रहा है, जहां देश के नीति-निर्माता और बड़े कॉर्पोरेट जगत के चेहरे संतों के चरणों में बैठकर सुख-शांति और राष्ट्र कल्याण का आशीर्वाद लेंगे।

नीमच के इतिहास में यह अवसर एक स्वर्णिम अध्याय की तरह दर्ज होने जा रहा है, जहाँ स्वामी कैलाशानंद जी महाराज के साथ देश के कई अन्य सिद्ध संत भी एक ही मंच पर विराजमान होंगे। इस दिव्य महोत्सव में अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के वर्तमान अध्यक्ष और हरिद्वार स्थित प्रसिद्ध माँ मनसा देवी मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत रवींद्र पुरी जी महाराज, संपला हरियाणा के बाबा कालीदास धाम से महायोगी परम पूज्य परमहंस बाबा श्री श्री 1008 कालीदास कृष्णानंद जी महाराज, जयपुर के हवामहल से माननीय विधायक व हातोजधाम के श्री बालमुकुन्दाचार्य जी महाराज और अन्नपूर्णा शक्ति पीठ सेमलिया धाम के परम पूज्य महामंडलेश्वर स्वामी मधुसुदनानंद गिरि जी महाराज का भी पावन सानिध्य प्राप्त होगा। इन सभी महान संतों की अमृतवाणी और आध्यात्मिक ऊर्जा से नीमच का वातावरण पूरी तरह से भक्तिमय और पावन हो उठेगा।

इस विशाल और गरिमापूर्ण कार्यक्रम की मेजबानी का सौभाग्य नीमच के प्रतिष्ठित चौपड़ा परिवार को मिला है। चौपड़ा परिवार के आतिथ्य में आयोजित इस अध्यात्म के महाकुंभ के लिए परिवार के सभी सदस्य दिन-रात तैयारियों में जुटे हुए हैं। कार्यक्रम के मुख्य निवेदकों में सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में सदैव अग्रणी रहने वाले जैन समाज के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, दिवाकर संगठन समिति एवं वैश्य समाज के संभागीय अध्यक्ष संतोष तथा रेणुबाला चौपड़ा, नीमच नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष गौरव तथा स्वाति चौपड़ा सहित श्रुति, अजय, आर्किन, वंश, जॉय एवं नीमच, जावद व चित्तौड़गढ़ का समस्त चौपड़ा परिवार शामिल है।

आयोजक चौपड़ा परिवार ने समस्त धर्मप्रेमी जनता, सामाजिक संगठनों, मातृशक्ति और युवाओं से विनम्र अपील की है कि वे इस ऐतिहासिक और पावन अवसर को न चूकें तथा आनंद विहार कॉलोनी रोड स्थित कार्यालय नंबर 36-बी के माध्यम से अपनी व्यवस्था सुनिश्चित करते हुए 11 जुलाई को टाउन हॉल पहुंचकर संतों के दिव्य प्रवचनों का लाभ उठाएं और अपने जीवन को धन्य बनाएं।

-:: मुख्य बिंदु ::-

- **ऐतिहासिक आगमन** : सनातन संस्कृति के ध्वजवाहक और निरंजनी अखाड़ा पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी श्री कैलाशानंद जी महाराज का नीमच की धरती पर पहली बार आगमन हो रहा है।
- **प्रमुख उद्देश्य** : यह समागम राष्ट्र उत्थान, सामाजिक कल्याण और विश्व शांति के पावन संकल्प के साथ आयोजित किया जा रहा है।
- **वीवीआईपी (VVIP) जमावड़ा** : कार्यक्रम में भारत सरकार के केंद्रीय मंत्री, विभिन्न राज्यों के कैबिनेट मंत्री, वरिष्ठ राजनेता और देश के नामचीन उद्योगपति व समाजसेवी शामिल होंगे।
- **भव्य मेजबानी** : इस विशाल कार्यक्रम की मेजबानी का सौभाग्य नीमच के प्रतिष्ठित चौपड़ा परिवार (संतोष-रेणुबाला चौपड़ा, नपा अध्यक्ष गौरव-स्वाति चौपड़ा एवं समस्त चौपड़ा परिवार) को मिला है।

लाभार्थी चौपड़ा परिवार

MP हाई कोर्ट का बड़ा फैसला....

केवल आपराधिक इतिहास के आधार पर नहीं रोक सकते जमानत, कोर्ट ने दी नियमित बेल

जबलपुर। हाई कोर्ट के न्यायमूर्ति देवनारायण मिश्रा की एकलपीठ ने अपने एक आदेश में स्पष्ट किया कि किसी आरोपित के विरुद्ध अनेक आपराधिक प्रकरण लंबित होना मात्र जमानत से इन्कार का आधार नहीं बन सकता। कोर्ट ने जबलपुर के बेलखेड़ा थाना के अपराध में आरोपित राजा सिंह को नियमित जमानत देते हुए कहा कि मामले के तथ्य और पीड़ित को लगी चोटों की प्रकृति भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

बचाव पक्ष की दलीलः झूठा फंसाया गया, कई मामलों में पहले से जमानत पर – आवेदक की ओर से अधिवक्ता शांतनु तिवारी ने दलील दी कि उनके मुवक्किल को झूठा फंसाया गया है। अभियोजन द्वारा 14 आपराधिक मामलों का हवाला दिया गया, लेकिन उनमें कई मामलों में आरोपित पहले से जमानत पर है। राज्य की ओर से उप शासकीय अधिवक्ता रविंद्र शुक्ला ने जमानत का विरोध करते हुए आरोपित के आपराधिक इतिहास का उल्लेख किया, हालांकि उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि पीड़ित को साधारण चोटें आई हैं।

कोर्ट की सख्त शर्तः दोबारा अपराध करने पर स्वतः निरस्त होगी जमानत – दोनों पक्षों को सुनने के बाद हाई कोर्ट ने आरोपित को 50 हजार रुपये के निजी मुचलके और समान राशि की जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया। अदालत ने महत्वपूर्ण शर्त जोड़ी कि यदि विचारण के दौरान आरोपित ने इसी प्रकृति का कोई अपराध दोहराया तो उसकी जमानत स्वतः समाप्त हो जाएगी और अभियोजन जमानत निरस्त कराने के लिए स्वतंत्र होगा।

190 तहसीलदारों का 10 साल बाद नियमित प्रमोशन, बन गए डिप्टी कलेक्टर

चन्द्रसिंह धार्वे प्रभारी से डिप्टी कलेक्टर बने

भोपाल । मध्य प्रदेश के तहसीलदारों के लिए लंबे इंतजार के बाद बड़ी खुशखबरी आई है। राज्य सरकार ने करीब 10 वर्षों से अटके नियमित पदोन्नति प्रक्रिया को आगे बढ़ा दिया है। 190 तहसीलदारों और लैंड रिकॉर्ड अधीक्षकों को डिप्टी कलेक्टर पद पर प्रमोट करने के आदेश जारी हुआ हैं। सामान्य प्रशासन विभाग ने मुख्यमंत्री मोहन यादव के निर्देश पर 7 जुलाई को इसका आदेश जारी किया। हालांकि, फिलहाल इन अधिकारियों की पदस्थापना में कोई बदलाव नहीं किया है। सरकार के इस फैसले से लंबे समय से रुकी पदोन्नतियों का रास्ता साफ हुआ है। माना जा रहा है कि इससे प्रशासनिक व्यवस्था को मजबूती मिलने के साथ रिक्त पदों को भरने की प्रक्रिया भी तेज होगी।

सरकारी अस्पतालों में अब नहीं मिलेंगी बेअसर एंटीबायोटिक दवाएं, नई योजना लागू

भोपाल। अब सरकारी अस्पतालों में मरीजों को बेअसर हो चुकी एंटीबायोटिक दवाएं नहीं दी जाएंगी। प्रदेश सरकार ने एंटीबायोटिक दवाओं के बेअसर होने की समस्या यानी एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस से निपटने के लिए मध्यप्रदेश राज्य कार्ययोजना 2.0 - एमपी-सैप-एएमआर 2.0 शुरू कर दी है। यह योजना अगले पांच साल तक यानी 2026 से 2030 तक चलेगी। इसे प्रदेश सरकार और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) मिलकर चलाएंगे। योजना का मुख्य मकसद एंटीबायोटिक का सही इस्तेमाल, लोगों में जागरूकता और अस्पतालों में संक्रमण रोकथाम है। इसी योजना के तहत अब प्रदेश के सभी सरकारी मेडिकल कॉलेजों और जिला अस्पतालों की लैब में शेकर इन्क्यूबेटर मशीनें लगाई जाएंगी। यह मशीन बैक्टीरिया और फफूंद को तय तापमान और नमी में उगाती है। इसके बाद उस पर अलग-अलग दवाओं का असर देखा जाएगा। इससे डॉक्टर तुरंत पता लगा सकेंगे कि मरीज के शरीर में मौजूद कीटाणु पर कौन सी दवा काम कर रही है और कौन सी दवा बेअसर हो गई है।

कर्नाटक के महामहिम राज्यपाल श्री थावरचंद गेहलोत ने हरकियाखाल बालाजी मंदिर में की पूजा-अर्चना

नीमच, 07 जुलाई (निप्र)। कर्नाटक के महामहिम राज्यपाल श्री थावरचंद गेहलोत ने मंगलवार को परिवार सहित नीमच जिले के सुप्रसिद्ध श्री संकट मोचन हरकियाखाल बालाजी मंदिर पहुंचकर, भगवान बालाजी के दर्शन किए तथा विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। इस दौरान उन्होंने प्रदेश एवं देश के सभी नागरिकों के सुख, समृद्धि, शांति और वैभवपूर्ण जीवन की मंगलकामना की। महामहिम राज्यपाल के हरकियाखाल बालाजी मंदिर आगमन पर जिला प्रशासन की ओर से कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा, पुलिस अधीक्षक श्री राजेश व्यास ने पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका आत्मीय स्वागत किया। मंदिर समिति की ओर से मुख्य पुजारी पंडित श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा, श्री दशरथ भाई एवं समिति के पदाधिकारियों ने शाल एवं श्रीफल भेंटकर महामहिम राज्यपाल का सम्मानपूर्वक अभिनंदन किया। इस अवसर पर महामहिम राज्यपाल ने भी मुख्य पुजारी का सम्मान कर उनका अभिवादन स्वीकार किया। इस अवसर पर विधायक नीमच श्री दिलीप सिंह परिहार, सांसद प्रतिनिधि नागदा श्री ओ.पी.गेहलोत, पूर्व विधायक आलोट श्री जितेंद्र गेहलोत, अपर कलेक्टर श्री बी.एस. कलेश, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती हेमलता अग्रवाल, एसडीएम श्री पराग जैन, मंदिर समिति के सदस्य, जनप्रतिनिधिगण, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी तथा बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं दर्शनार्थी उपस्थित रहे।

65 साल पुरानी जर्जर बिल्डिंग का छज्जा गिरा

बिल्डिंग में अब भी रह रहे 14 परिवार, प्रशासन पर लापरवाही के आरोप

नीमच । शहर में दशकों पुरानी जर्जर इमारत का छज्जा सोमवार रात लगभग 11:45 बजे गिर गया। घटना गांधी वाटिका स्थित रतन देवी मांगलिक भवन के सामने हुई। गनीमत रही कि हादसे में कोई जनहानि नहीं हुई। स्थानीय रूप से 'बेधड़क बिल्डिंग' के नाम से जानी जाने वाली इमारत 65 साल से अधिक पुरानी है और पूरी तरह जर्जर हो चुकी है। चौंकाने वाली बात यह है कि जर्जर इमारत में वर्तमान में करीब 14 से अधिक परिवार किराए से रह रहे हैं, जिनमें मकान मालिक सहित 55 से अधिक सदस्य शामिल हैं। प्रशासन की ओर से अब तक इस पर कोई कार्रवाई नहीं की गई है।

बिल्डिंग का ऊपरी बाहरी हिस्सा ढह गया – सोमवार रात को बिल्डिंग का एक ऊपरी बाहरी हिस्सा अत्यधिक जर्जर होने के कारण अचानक ढह गया। रात का समय और बारिश होने के कारण उस वक्त कोई व्यक्ति बाहर मौजूद नहीं था, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया । उल्लेखनीय है कि जिले के सिंगोली में पूर्व में ऐसे ही एक जर्जर भवन के गिरने से मां और बेटे की मौत हो चुकी है। जिलेभर में अन्य स्थानों पर भी ऐसे कई हादसे हुए हैं। प्रशासन को ऐसे जर्जर भवनों को चिन्हित कर वैधानिक कार्रवाई करनी चाहिए ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

जोनसंगम-2026: चिकित्सा सेवा के श्रेष्ठ योगदान पर डॉ. अशोक जैन को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

नीमच। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) नीमच द्वारा आयोजित जोनसंगम-2026 के सम्मान समारोह में चिकित्सा क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाएं देने वाले चिकित्सकों और विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं का सम्मान किया गया। समारोह में वरिष्ठ फिजिशियन डॉ. अशोक जैन को चिकित्सा क्षेत्र में आजीवन योगदान के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि सांसद सुधीर गुप्ता ने कहा कि डॉक्टर केवल मरीजों का उपचार नहीं करते, बल्कि स्वस्थ समाज की मजबूत नींव भी तैयार करते हैं। मानवता की सेवा में चिकित्सकों का योगदान अतुलनीय है और उनका सम्मान पूरे समाज का सम्मान है। उन्होंने कहा कि सरकार स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार के साथ डॉक्टरों के बेहतर कार्य वातावरण के लिए भी लगातार प्रयास कर रही है। कार्यक्रम में पूर्व मंत्री एवं जावद विधायक ओमप्रकाश सकलेचा ने कहा कि चिकित्सा सेवा केवल पेशा नहीं, बल्कि मानवता की सर्वोच्च साधना है। वहीं नीमच विधायक दिलीपसिंह परिहार ने कहा कि जिले के डॉक्टरों ने कोरोना काल सहित हर संकट में समर्पण और सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है।

स्ट्रोक के उपचार में 'गोल्डन ऑवर' सबसे अहम – मरेंगो सिम्स हॉस्पिटल, अहमदाबाद के न्यूरो इंटरवेंशन एवं स्ट्रोक विशेषज्ञ डॉ. मुकेश एन. शर्मा ने आधुनिक चिकित्सा तकनीकों पर व्याख्यान देते हुए कहा कि स्ट्रोक के मरीजों के लिए शुरुआती 'गोल्डन ऑवर' सबसे महत्वपूर्ण होता है। समय पर पहचान और अत्याधुनिक उपचार से हजारों लोगों की जान बचाई जा सकती है। उन्होंने चिकित्सकों से नई तकनीकों को अपनाने और आमजन को जागरूक करने का आह्वान किया।

आईएमए निभा रही सामाजिक जिम्मेदारी – कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन और सरस्वती वंदना से हुई। आईएमए नीमच के अध्यक्ष डॉ. मनीष चमड़िया ने स्वागत भाषण में कहा कि संगठन वर्षभर रक्तदान, सीपीआर प्रशिक्षण, योग, कैंसर, मधुमेह, नेत्र एवं दंत स्वास्थ्य जागरूकता जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभा रहा है। सचिव डॉ. आदित्य भंडारी ने सभी अतिथियों, चिकित्सकों और सहयोगी संस्थाओं का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विपुल गर्ग ने किया।

डॉक्टर्स डे सीरीज के विजेताओं का हुआ सम्मान – समारोह में डॉक्टर्स डे सेलिब्रेशन सीरीज-2026 के अंतर्गत आयोजित टेबल टेनिस, बैडमिंटन, शतरंज, कैरम, क्रिकेट, मैराथन, ड्राइंग और फायरलेस कुकिंग सहित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं वर्षभर जनस्वास्थ्य और सामाजिक गतिविधियों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले चिकित्सकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

Email: nmh.pawan@gmail.com
Contact: 9407423966, 8770664886

मादक पदार्थों का बढ़ता साम्राज्य और सिमटते सपने

योगेश कुमार गोयल

अंतर्राष्ट्रीय नशा एवं मादक पदार्थ निषेध दिवस हमें यही संदेश देता है कि नशे के खिलाफ लड़ाई किसी एक दिन का अभियान नहीं बल्कि सतत सामाजिक आंदोलन है। यदि भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है तो सबसे पहले उसकी युवा शक्ति को नशे के अंधकार से मुक्त करना होगा। देश की युवा सोच पर लगा यह ग्रहण तभी हटेगा, जब सरकार, समाज, परिवार और स्वयं युवा मिलकर इस चुनौती का सामना करेंगे।

ड्रग्स के दलदल में धंसती युवा पीढ़ी...

किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसकी युवा पीढ़ी के सपनों, ऊर्जा और सृजनशीलता पर निर्भर करता है लेकिन जब यही युवा पीढ़ी नशे की गिरफ्त में आने लगे तो यह केवल एक सामाजिक समस्या नहीं रह जाती बल्कि राष्ट्रीय संकट का रूप धारण कर लेती है। आज भारत सहित दुनिया के अनेक देशों के सामने यही चुनौती खड़ी है। युवाओं की प्रतिभा, उनकी सोच, उनकी रचनात्मकता और उनके भविष्य पर नशे का ऐसा ग्रहण लग रहा है, जो न केवल परिवारों को बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र को भीतर से खोखला कर रहा है। इसी गंभीर चुनौती के प्रति वैश्विक जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 26 जून को 'अंतर्राष्ट्रीय नशा एवं मादक पदार्थ निषेध दिवस' मनाया जाता है। यह दिवस केवल औपचारिक आयोजन नहीं बल्कि पूरी मानवता को चेताने का अवसर है कि यदि नशे के बढ़ते दुष्चक्र को समय रहते नहीं रोका गया तो इसके परिणाम आने वाली पीढ़ियों को भी भुगतने पड़ेंगे।

भारत में नशे की समस्या अब महानगरों तक सीमित नहीं रही। यह गांवों, कस्बों, छोटे शहरों और यहां तक कि स्कूलों तथा कॉलेजों तक पहुंच चुकी है। कभी माना जाता था कि नशीले पदार्थों का सेवन केवल संपन्न वर्ग या शहरी संस्कृति की समस्या है लेकिन आज वास्तविकता इससे कहीं अधिक भयावह है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी अफीम, चरस, गांजा, हेरोइन, सिंथेटिक ड्रग्स और इंजेक्शन के माध्यम से लिए जाने वाले नशीले पदार्थों का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। यह स्थिति बताती है कि नशे का नेटवर्क अब समाज की हर परत तक पहुंच चुका है। आज का युवा अनेक प्रकार के दबावों से घिरा हुआ है। प्रतिस्पर्धा, बेरोजगारी, सामाजिक अपेक्षाएं, पारिवारिक तनाव, मानसिक अवसाद, अकेलापन और त्वरित सफलता की चाह उसे भीतर से कमजोर बना रही है। ऐसे में नशे के सौदागर युवाओं की इन्हीं कमजोरियों का फायदा उठाकर उन्हें अपने जाल में फंसा लेते हैं। कई बार मित्रों का दबाव, आधुनिक दिखने की चाह, रोमांच की तलाश या क्षणिक सुख का आकर्षण युवाओं को नशे की ओर धकेल देता है। शुरूआत अक्सर जिज्ञासा से होती है लेकिन धीरे-धीरे यही जिज्ञासा लत और फिर विनाश का कारण बन जाती है।

इंटरनेट और डिजिटल तकनीक ने जहां ज्ञान के नए द्वार खोले हैं, वहीं नशे के कारोबार को भी नए साधन उपलब्ध कराए हैं। सोशल मीडिया, एन्क्रिप्टेड मैसेजिंग एप्स और

डार्क वेब के माध्यम से मादक पदार्थों की खरीद-फरोख्त पहले से कहीं अधिक आसान हो गई है। अब नशे का सौदा किसी सुनसान गली तक सीमित नहीं बल्कि स्मार्टफोन की स्क्रीन तक पहुंच चुका है। यही कारण है कि कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में नशे की पहुंच चिंताजनक रूप से बढ़ती जा रही है। आज देश के अनेक प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में नशीले पदार्थों की उपलब्धता को लेकर समय-समय पर गंभीर सवाल उठते रहे हैं। यह विडंबना ही है कि जिन परिसरों में देश के भविष्य का निर्माण होना चाहिए, वहां कुछ युवा अपने भविष्य को स्वयं नष्ट करने की राह पर बढ़ रहे हैं। आधुनिकता और स्वतंत्रता की गलत व्याख्या ने भी इस समस्या को बढ़ाया है। कई युवाओं को यह भ्रम होता है कि नशा उन्हें अधिक आत्मविश्वासी, रचनात्मक और आधुनिक बनाता है, जबकि वास्तविकता इसके बिल्कुल विपरीत है। नशा व्यक्ति की सोचने-समझने की क्षमता को धीरे-धीरे समाप्त कर देता है। उसकी निर्णय लेने की शक्ति कमजोर हो जाती है, स्मरणशक्ति प्रभावित होती है, एकाग्रता घटती है और मानसिक संतुलन बिगड़ने लगता है। जो युवा अपने जीवन में बड़े सपने लेकर आगे बढ़ता है, वही नशे की गिरफ्त में आकर अपनी प्रतिभा और संभावनाओं को स्वयं नष्ट कर देता है। यही कारण है कि नशे को केवल स्वास्थ्य समस्या नहीं बल्कि मानव संसाधन के विनाश की समस्या माना जाता है।

नशीले पदार्थों का सबसे घातक प्रभाव यह है कि वे व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों से गुलाम बना देते हैं। एक बार लत लग जाने पर व्यक्ति उसी प्रभाव को बनाए रखने के लिए लगातार अधिक मात्रा में नशा लेने लगता है। परिणामस्वरूप उसका शरीर कमजोर होने लगता है, भूख कम हो जाती है, वजन घटता है, आंखें लाल रहने लगती हैं, नींद प्रभावित होती है, चिड़चिड़ापन बढ़ता है और अवसाद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। कई मामलों में व्यक्ति आत्मघाती प्रवृत्तियों का शिकार भी हो जाता है। इंजेक्शन के माध्यम से नशा करने वालों के सामने खतरा और भी गंभीर होता है। एक ही सुई के बार-बार उपयोग से एचआईवी, हेपेटाइटिस और अन्य संक्रमण फैलने की आशंका बढ़ जाती है। यही कारण है कि नशा केवल व्यक्ति को ही नहीं बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था के लिए भी गंभीर चुनौती बन जाता है।

नशे का अवैध व्यापार दुनिया के सबसे लाभकारी अपराधों में शामिल है। अरबों-खरबों रुपये का यह कारोबार अंतर्राष्ट्रीय तस्करी, आतंकवाद, संगठित अपराध और मनी लॉन्ड्रिंग जैसे अपराधों से गहराई से जुड़ा हुआ है। भारत की भौगोलिक स्थिति इसे गोल्डन क्रेसेंट और गोल्डन ट्रायंगल जैसे नशीले पदार्थों के प्रमुख उत्पादन क्षेत्रों के बीच महत्वपूर्ण मार्ग बनाती है। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, म्यांमार और अन्य पड़ोसी क्षेत्रों से आने वाली तस्करी की खेपें भारत के लिए लगातार चुनौती बनी हुई हैं। सबसे चिंताजनक बात यह है कि ड्रग्स का यह अवैध कारोबार अब अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग कर रहा है। ड्रोन, एन्क्रिप्टेड संचार माध्यम, फर्जी पहचान और डिजिटल भुगतान प्रणालियां तस्करों को नई ताकत प्रदान कर रही हैं। ऐसे में केवल पारंपरिक पुलिसिंग से इस समस्या पर नियंत्रण संभव नहीं है। इसके लिए तकनीकी, सामाजिक और कानूनी स्तर पर व्यापक रणनीति की आवश्यकता है।

भारत में हालांकि मादक पदार्थों की तस्करी और सेवन को रोकने के लिए कड़े कानून मौजूद हैं लेकिन कानूनों के प्रभावी क्रियान्वयन की चुनौती अभी भी बनी हुई है। नशे के खिलाफ लड़ाई केवल पुलिस, प्रशासन या सरकार की जिम्मेदारी नहीं हो सकती, यह समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। परिवारों को अपने बच्चों के साथ संवाद बढ़ाना होगा। शिक्षण संस्थानों को नशा विरोधी जागरूकता अभियान चलाने होंगे। धार्मिक और सामाजिक संगठनों को भी इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। दरअसल नशे के खिलाफ सबसे प्रभावी हथियार जागरूकता, शिक्षा और सकारात्मक वातावरण है। यदि युवाओं को बेहतर शिक्षा, रोजगार, खेल, कला, संस्कृति और रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ा जाए तो वे नशे जैसे विनाशकारी रास्तों से दूर रह सकते हैं। हमें युवाओं को केवल नशे के दुष्परिणाम बताने तक सीमित नहीं रहना चाहिए बल्कि उन्हें जीवन का सकारात्मक उद्देश्य भी देना होगा।

अंतर्राष्ट्रीय नशा एवं मादक पदार्थ निषेध दिवस हमें यही संदेश देता है कि नशे के खिलाफ लड़ाई किसी एक दिन का अभियान नहीं बल्कि सतत सामाजिक आंदोलन है। यदि भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है तो सबसे पहले उसकी युवा शक्ति को नशे के अंधकार से मुक्त करना होगा। देश की युवा सोच पर लगा यह ग्रहण तभी हटेगा, जब सरकार, समाज, परिवार और स्वयं युवा मिलकर इस चुनौती का सामना करेंगे। आज आवश्यकता इस बात की है कि युवाओं के हाथों में नशे की पुड़िया नहीं, ज्ञान की पुस्तक हो; उनकी आंखों में नशे का धुंधलापन नहीं, सपनों की चमक हो; और उनकी सोच पर नशे का ग्रहण नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण का उज्ज्वल प्रकाश हो। यही नशा-मुक्त भारत की सबसे बड़ी आवश्यकता है और यही विकसित भारत की सबसे मजबूत नींव भी।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं तथा नशे के दुष्प्रभावों पर 1993 में पुरस्कृत पुस्तक 'मौत को खुला निमंत्रण' लिख चुके हैं)

संपादकीय

सूखे की आहट

दक्षिण-पश्चिम मॉनसून के कमजोर रहने की चिंताओं के बीच देश के कृषि क्षेत्र के सामने सूखे की चुनौती पैदा होने की आशंका बलवती हुई है। हाल-फिलहाल बारिश में चालीस से छियालीस प्रतिशत की कमी मापी गई है। देश के मौसम विज्ञान विभाग द्वारा दो जुलाई तक मानसून की सक्रियता कम रहने के अनुमान के कारण खरीफ की फसल को लेकर चिंताएं बढ़ रही हैं। केंद्र सरकार ने कम बारिश वाले 315 जिलों में से 111 ऐसे जिलों की पहचान की है, जो सूखे की दृष्टि से ज्यादा जोखिम वाले हो सकते हैं। जो आसन्न संकट की गंभीरता को भी दशार्ता है। यह विडंबना है कि तमाम सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के बावजूद आज देश में खेती की मॉनसून की बारिश पर निर्भरता बनी हुई है। यही वजह है कि मॉनसून में देरी या कम बारिश होने का सीधा असर फसल की बुवाई, खाद्यान्न की पैदावार, ग्रामीणों की आय और खाने-पीने की वस्तुओं की महंगाई के रूप में पड़ता है। ऐसे में यदि जुलाई व अगस्त माह के महत्वपूर्ण समय में बारिश सामान्य से कम होती है तो इसके परिणाम चिंता बढ़ाने वाले हो सकते हैं। केंद्र सरकार राज्य और जिले स्तर पर आपातकालीन योजनाएं तैयार कर रही है। सरकार सूखे में भी बेहतर उत्पादन कर सकने वाली फसलों को बढ़ावा देने के साथ ही जल संरक्षण पर जोर दे रही है। साथ ही कोशिश है कि किसानों के लिये बीज-उर्वरकों की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित की जाए। देश में दालों, तिलहन और मोटे अनाजों की खेती को प्राथमिकता देना जरूरी है, क्योंकि ये फसलें कम पानी में भी सामान्य उत्पादन दे सकती हैं। सुखद ही है कि अल नीनो मॉनिटरिंग सेल को सक्रिय किया गया ताकि कृषि विज्ञान केंद्रों के जरिये रियल-टाइम सलाह किसानों को देकर सूखे के प्रभावों को कम किया जा सके। निश्चित रूप से पूरी तैयारी के साथ सूखे से मुकाबले का मतलब है कि हमने आधी लड़ाई जीत ली है। आज जरूरत इस बात की है कि सूखे की आशंका के बीच जल संकट से मुकाबले के लिये एक प्रभावी समग्र नीति बने। समय-समय पर इन नीतियों में सुधार किया जाए। जरूरी है कि जलवायु परिवर्तन संकट के दौर में मानसून के व्यवहार में अनिश्चितता के बीच खेती की बारिश पर निर्भरता को कम करने के लिये व्यापक रणनीति तैयार की जाए। इसके लिये जरूरी है कि सूक्ष्म-सिंचाई सुविधा का विस्तार, जल निकायों के पुनरुद्धार, भूजल प्रबंधन को बेहतर बनाने और जलवायु के अनुरूप खेती को बढ़ावा देने के प्रयास हों। हम मौसम के बदलते मिजाज पर हर बार प्रतिक्रिया देने के बजाय दीर्घकालिक राष्ट्रीय प्राथमिकताएं सुनिश्चित करें। हमें किसानों को आर्थिक संकट से उबारने को अपनी वरीयता सूची में शामिल करना चाहिए। विडंबना यह है कि प्राकृतिक आपदाओं से फसलों की रक्षा के लिये बीमा कवरेज अभी भी ज्यादा प्रभावी नहीं है। किसानों को फसलों को क्षति पहुंचने पर मुआवजा लेने के बारे में व्यावहारिक जानकारी अक्सर कम ही होती है। वैसे तो देश में अनाज का पर्याप्त भंडारण है और आपातकालीन व्यवस्था के चलते देश की खाद्य सुरक्षा को तुरंत कोई बड़ा खतरा नहीं है।

चिंतन-मनन

बदला हुआ आदमी

स्कॉटलैंड के एक राजा को शत्रुओं ने पराजित कर दिया। उसे धन-जन की बड़ी हानि हुई और संगी-साथी भी छूट गए। अब बस उसका जीवन बचा था, पर शत्रु उसकी टोह में थे। प्राण बचाने के लिए वह भागा-भागा फिर रहा था। स्थिति यह थी कि राजा अब मरा कि तब मरा। राजा एक खोह में छिपा अपनी मौत की प्रतीक्षा करते हुए सोच रहा था- शत्रु की तलवार पल भर में मेरा काम तमाम कर देगी।

तभी राजा ने देखा- एक मकड़ी खोह के दरवाजे पर जाला बनाने में व्यस्त थी। वह कई बार कोशिश करती, नाकाम रहती, लेकिन फिर से उठकर जाला बनाने लगती। राजा ने सोचा- यह व्यर्थ प्रयत्न कर रही है। बिना आधार के जाला भला कैसे बना पाएगी। किंतु आश्चर्य, मकड़ी का एक झीना-सा सूत्र खोह के मुंह पर अटक ही गया। बस फिर एक के बाद एक सूत्र अटकते चले गए और देखते-देखते जाला तेजी से बुना जाने लगा। थोड़ी देर में पूरी खोह के मुंह पर जाला तैयार था।

तभी शत्रु के सिपाही वहां आ पहुंचे। लेकिन खोह के मुंह पर मकड़ी का जाला बना देख वापस लौट गए। करीब आई हुई मौत तो वापस चली गई पर राजा को एक गहरे विचार में छोड़ गई। उसने सोचा- मकड़ी बार-बार गिरकर भी निराश और परास्त नहीं हुई तो मैं इंसान होकर भी क्यों डर रहा हूं? मैं भी अवश्य अपने शत्रुओं को परास्त करूंगा। इस मकड़ी ने मेरा संकल्प मजबूत कर दिया है। यह सोचते ही वह खोह से बाहर निकल गया।

समय पर वेतन और वार्षिक वेतन वृद्धि की मांग को लेकर आशा कार्यकर्ताओं का प्रदर्शन, 18 सूत्रीय ज्ञापन सौंपा

नीमच। प्रदेशव्यापी आह्वान के तहत सोमवार को आशा एवं आशा पर्यवेक्षक एकता यूनियन (सीटू) के बैनर तले जिले की आशा कार्यकर्ताओं और पर्यवेक्षकों ने समय पर वेतन भुगतान, वार्षिक वेतन वृद्धि सहित 18 सूत्रीय मांगों को लेकर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं मिशन संचालक के नाम डिप्टी कलेक्टर चंद्रसिंह धारवे को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन से पूर्व हनुमान मंदिर परिसर में सभा आयोजित की गई, जिसके बाद रैली निकालकर कलेक्ट्रेट पहुंचकर प्रदर्शन किया गया।

यूनियन की जिला अध्यक्ष कृष्णा कांटे, महासचिव रेखा व्यास और उपाध्यक्ष कांता अहीर ने बताया कि आशा कार्यकर्ता और आशा पर्यवेक्षक राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की योजनाओं को गांव-गांव तक पहुंचाने, मातृ एवं शिशु मृत्यु दर कम करने तथा विभिन्न स्वास्थ्य अभियानों के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके बावजूद उन्हें समय पर मानदेय नहीं मिल रहा और कई-कई महीनों तक भुगतान लंबित रहता है।

ज्ञापन में कहा गया कि वर्तमान में प्रदेश में आशा कार्यकर्ताओं को मात्र 6 हजार रुपये मासिक मानदेय दिया जा रहा है, जो परिवार के भरण-पोषण के लिए पर्याप्त नहीं है। वर्ष 2023 में घोषित एक हजार रुपये वार्षिक वेतन वृद्धि का लाभ भी अब तक नहीं दिया गया, जबकि अन्य वर्गों के कर्मचारियों को इसका लाभ मिल रहा है।

यूनियन ने आरोप लगाया कि वेतन भुगतान व्यवस्था में पारदर्शिता का अभाव है। कई बार तीन-चार माह तक भुगतान रोका जाता है और बाद में आंशिक राशि देकर पूरा भुगतान होने की बात कह दी जाती है। साथ ही गैर विभागीय कार्यों का दबाव भी आशा कार्यकर्ताओं पर बनाया जाता है। आयुष्मान कार्ड बनाने जैसे कार्यों में कई आशाओं को अपने स्तर पर खर्च भी करना पड़ा।

ज्ञापन में समय पर वेतन भुगतान, लंबित राशि का भुगतान, वार्षिक वेतन वृद्धि लागू करने, सवेतन साप्ताहिक अवकाश, अतिरिक्त यात्रा भत्ता सहित 18 सूत्रीय मांगों पर शीघ्र निर्णय लेने की मांग की गई। इस दौरान सीटू के प्रदेश सचिव शैलेंद्र सिंह ठाकुर, जिला महासचिव सुनील शर्मा सहित नीमच, जावद, मनासा और पालसोड़ा ब्लॉक की सैकड़ों आशा कार्यकर्ता एवं आशा पर्यवेक्षक मौजूद रहीं।

मॉनिटर लिजार्ड (गोह) के अवशेष बेच रहे थे 3 तस्कर : मंदसौर वन विभाग ने नेहरू बस स्टैंड से किया गिरफ्तार, 19 हत्था जोड़ी बरामद

मन्दसौर । मंदसौर वन विभाग ने सोमवार को बड़ी कार्रवाई करते हुए मॉनिटर लिजार्ड (गोह) के अवशेष, जिन्हें 'हत्था जोड़ी' के नाम से जाना जाता है, की अवैध बिक्री करते तीन लोगों को गिरफ्तार किया। उनके पास से 19 नग हत्था जोड़ी बरामद की गई। तीनों के खिलाफ वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत मामला दर्ज किया गया। इसके बाद उन्हें न्यायालय में पेश किया गया, जहां से 15 जुलाई 2026 तक न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

वन विभाग को वनमंडलाधिकारी के माध्यम से सूचना मिली थी कि नेहरू बस स्टैंड स्थित नेहरू पार्क गेट के पास वन्यजीवों के अवशेषों की अवैध बिक्री हो रही है। सूचना मिलते ही एक विशेष टीम बनाई गई। टीम ने मौके पर पहुंचकर मुखबिर के बताए हुलिए के आधार पर एक महिला और दो पुरुषों को पकड़ लिया।

तीनों आरोपी रूपावली गांव के निवासी – गिरफ्तार आरोपियों की पहचान सुरेश सिंह (54) पिता मलेसिंह पारदी, करोल सिंह (36) पिता मुछालसिंह पारदी और भारतबाई (52) पति सुरेश पारदी के रूप में हुई है। तीनों मंदसौर जिले के ग्राम रूपावली, पोस्ट साबाखेड़ा के निवासी हैं।

संरक्षित वन्यजीव है मॉनिटर लिजार्ड – वन विभाग के अनुसार, मॉनिटर लिजार्ड (गोह) वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की प्रथम अनुसूची में शामिल संरक्षित वन्यजीव है। इसका शिकार करना, व्यापार करना या इसके अंगों की खरीद-फरोख्त करना कानूनन अपराध है।

आरोपियों के खिलाफ परिक्षेत्र मंदसौर में वन अपराध प्रकरण क्रमांक 3832/16 के तहत विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। विभाग ने बताया कि ऐसे मामलों में 3 से 7 वर्ष तक की सजा और न्यूनतम 25 हजार रुपये जुर्माने का प्रावधान है। मामले की विस्तृत जांच जारी है।

हत्था जोड़ी क्या है? – 'हत्था जोड़ी' असल में कोई चमत्कारी वनस्पति या पौधा नहीं है, बल्कि यह संकटग्रस्त वन्यजीव मॉनिटर लिजर्ड (गोह) के नर जननांग (हेमीपेनिस) होते हैं। तांत्रिक अनुष्ठान, वशीकरण, भाग्य चमकाने और धन समृद्धि के नाम पर फैले अंधविश्वास के कारण इस बेकसूर जानवर का बेरहमी से शिकार किया जाता है। इसके अंगों को सुखाकर बाजारों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर धोखे से बेचा जाता है।

नीमच में निशुल्क नेत्र शिविर, 200 से अधिक मरीज पहुंचे : रेडक्रॉस-गोमाबाई नेत्रालय की पहल, निशुल्क ऑपरेशन की सुविधा

नीमच । कलेक्टर हिमांशु चंद्रा के निर्देश पर सोमवार को जिला चिकित्सालय के समीप रेडक्रॉस भवन में एक निशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। रेडक्रॉस सोसाइटी और गोमाबाई नेत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस शिविर में 200 से अधिक मरीजों ने अपनी आंखों की जांच करवाई। उन्हें निशुल्क दवाइयां, चश्मे और ऑपरेशन की सुविधा प्रदान की जाएगी। रेडक्रॉस सचिव डॉ. स्वप्निल वाधवा ने बताया कि जांच अभियान सुबह 10 बजे शुरू होकर दोपहर 3 बजे तक चला। इसके बाद पंजीकरण बंद कर दिया गया, लेकिन पंजीकृत मरीजों की जांच देर तक जारी रही। शहर और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग शिविर में पहुंचे। गोमाबाई नेत्रालय के विशेषज्ञ चिकित्सकों और पैरामेडिकल स्टाफ ने मरीजों की आंखों की गहन जांच की। आवश्यकतानुसार दवाइयां और चश्मे पूरी तरह निशुल्क वितरित किए गए। डॉ. वाधवा ने स्पष्ट किया कि जिन मरीजों में मोतियाबिंद या आंखों से संबंधित अन्य गंभीर बीमारियां पाई गई हैं, उन्हें चिन्हित किया गया है। इन सभी मरीजों के ऑपरेशन और आगे के संपूर्ण इलाज की व्यवस्था रेडक्रॉस के माध्यम से पूरी तरह निशुल्क करवाई जाएगी। शिविर की व्यवस्थाओं का जायजा लेने के लिए डिप्टी कलेक्टर श्रुति बरडिया भी रेडक्रॉस भवन पहुंचीं। उन्होंने मरीजों की जांच प्रक्रिया का निरीक्षण किया और उपस्थित नागरिकों से संवाद कर सुविधाओं का फीडबैक लिया। दोपहर तक चले इस शिविर में कुल 200 से अधिक मरीजों ने पंजीकरण करवाकर सेवा का लाभ उठाया। मरीजों ने इस निशुल्क उपचार और परामर्श के लिए जिला प्रशासन और रेडक्रॉस सोसाइटी के प्रति आभार व्यक्त किया।

सीवरेज लाइन में काम करते समय मजदूर की मौत

नीमच CRPF कैंपस में बचाने गए साथी की भी गई जान, सुरक्षा किट नहीं पहने थे

नीमच । सीआरपीएफ (CRPF) परिसर में मंगलवार को सीवरेज लाइन के गहरे चैंबर में काम करने उतरे दो मजदूरों की मौत हो गई। आशंका जताई जा रही है कि चैंबर के अंदर बनी जहरीली गैस या दम घुटने की वजह से दोनों की जान गई है। इस घटना के बाद साथी मजदूरों ने ठेका कंपनी पर सुरक्षा किट न देने और लापरवाही बरतने के गंभीर आरोप लगाए हैं।

मृतकों में से एक मजदूर महेश (25 साल, पिता जालौर) झाबुआ जिले के नाहरपुरा का रहने वाला था, जो पिछले 3-4 महीनों से केंट परिसर में मजदूरी कर रहा था। मंगलवार दोपहर वह अपनी पत्नी अनीता बाई से सीवरेज लाइन की मरम्मत करने जाने की बात कहकर निकला था। जब वह काफी देर तक वापस नहीं लौटा, तो परेशान पत्नी उसे तलाशने निकली। बारिश रुकने के बाद जब उसने निर्माणाधीन सीवरेज के गहरे चैंबर में झांककर देखा, तो वहां महेश बेसुध पड़ा हुआ था।

बचाने उतरा साथी भी आया चपेट में – महेश को चैंबर में फंसा देख वहां चीख-पुकार मच गई। उसे सुरक्षित बाहर निकालने के लिए बिहार के सुपौल जिले का रहने वाला रूपेश (19 साल, पिता रामू शाह तेली) हिम्मत दिखाकर चैंबर के भीतर उतरा। लेकिन गड्ढे के अंदर जहरीली गैस का असर इतना तेज था कि रूपेश भी पैर रखते ही बेहोश हो गया। बाद में वहां मौजूद दूसरे कर्मचारियों की मदद से दोनों को बमुश्किल बाहर निकाला गया। शाम साढ़े 4 बजे सीआरपीएफ की एम्बुलेंस और एक टेंपो के जरिए उन्हें तुरंत जिला अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने जांच के बाद दोनों को मृत घोषित कर दिया। कैंट पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम रूम में रखवाकर मर्ग कायम कर लिया है।

90% से कम ई-अटेंडेंस वाले अतिथि शिक्षकों को राहत, 10 जुलाई तक मांगे अभ्यावेदन

नीमच 06 जुलाई । जिले में कार्यरत ऐसे अतिथि शिक्षकों के लिए जिला शिक्षा विभाग ने एक और अवसर दिया है, जो शैक्षणिक सत्र 2025-26 के दौरान विशेष परिस्थितियों के कारण 90 प्रतिशत ई-अटेंडेंस पूरी नहीं कर सके और इसी वजह से उनकी री-ज्वाइनिंग नहीं हो पाई। ऐसे अतिथि शिक्षकों से 10 जुलाई 2026 तक अभ्यावेदन आमंत्रित किए गए हैं ।

जिला शिक्षा अधिकारी ने बताया कि संबंधित अतिथि शिक्षक अपने आवेदन आवश्यक दस्तावेजी साक्ष्यों के साथ deonee-mp@nic.in पर ई-मेल के माध्यम से भेज सकते हैं। विभाग ने स्पष्ट किया है कि हार्ड कॉपी स्वीकार नहीं की जाएगी, केवल ई-मेल से प्राप्त आवेदन ही मान्य होंगे । अभ्यावेदन के साथ अनुपस्थिति के कारणों के समर्थन में आवश्यक प्रमाण-पत्र संलग्न करना अनिवार्य होगा। इनमें मातृत्व अवकाश, चाइल्ड केयर, प्रतियोगी या शैक्षणिक परीक्षाओं में शामिल होना, नेटवर्क या तकनीकी समस्या, गंभीर बीमारी, विवाह अथवा परिवार में आकस्मिक मृत्यु जैसी परिस्थितियों के दस्तावेज शामिल किए जा सकते हैं। यदि कोई अन्य विशेष कारण रहा हो तो उसका भी प्रमाण सहित उल्लेख किया जा सकता है ।

जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय ने पात्र अतिथि शिक्षकों से निर्धारित समय-सीमा के भीतर ई-मेल के माध्यम से आवेदन भेजने की अपील की है, ताकि उनके प्रकरण पर नियमानुसार विचार किया जा सके।

महाभारत का हुआ था जहां युद्ध उस कुरुक्षेत्र के रहस्य

कुरुक्षेत्र युद्ध कौरवों और पाण्डवों के मध्य कुरु साम्राज्य के सिंहासन की प्राप्ति के लिए कुरुक्षेत्र में युद्ध लड़ा गया था। आओ जानते हैं कुरुक्षेत्र के 5 रहस्य। कुरुक्षेत्र भारतीय राज्य हरियाणा का एक क्षेत्र है।

छोटे भाई का वध

मान्यता अनुसार यह कहा जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण को डर था कि भाई-भाइयों के, गुरु-शिष्यों के व संबंधी कुटुंबियों के इस युद्ध में एक दूसरे को मरते देखकर कहीं ये संधि न कर बैठें। इसलिए ऐसी भूमि युद्ध के लिए चुनने का फैसला लिया गया जहां क्रोध और द्वेष के संस्कार पर्याप्त मात्रा में हों। तब श्रीकृष्ण ने कई दूत अनेकों दिशाओं में भेजे और उन्हें वहां की घटनाओं का जायजा लेने को कहा। एक दूत ने सुनाया कि कुरुक्षेत्र में बड़े भाई ने छोटे भाई को खेत की मेंड़ टूटने पर बहते हुए वर्षा के पानी को रोकने के लिए कहा। उसने साफ इनकार कर दिया। इस पर बड़ा भाई आग बबूला हो गया। उसने छोटे भाई को छुरे से गोद डाला और उसकी लाश को पैर पकड़कर घसीटता हुआ उस मेंड़ के पास ले गया और जहां से पानी निकल रहा था वहां उस लाश को पानी रोकने के लिए लगा दिया। इस कहानी को सुनकर श्रीकृष्ण ने तय किया कि यही भूमि भाई-भाई के युद्ध के लिए उपयुक्त है। जब श्रीकृष्ण आश्वस्त हो गए कि इस भूमि के संस्कार यहां पर भाइयों के युद्ध में एक दूसरे के प्रति प्रेम उत्पन्न नहीं होने देंगे तब उन्होंने युद्ध कुरूक्षेत्र में करवाने की घोषणा की।

कुरु का क्षेत्र

दूसरी कहानी अनुसार कहते हैं कि जब कुरु इस क्षेत्र की जुताई कर रहे थे तब इन्द्र ने उनसे जाकर इसका कारण पूछा। कुरु ने कहा कि जो भी व्यक्ति इस स्थान पर मारा जाए, वह पुण्य लोक में जाए, ऐसी मेरी इच्छा है। इन्द्र उनकी बात को हंसी में उड़ाते हुए स्वर्गलोक चले गए। ऐसा अनेक बार हुआ। इन्द्र ने अन्य देवताओं को भी ये बात बताई। देवताओं ने इन्द्र से कहा कि यदि संभव हो तो कुरु को अपने पक्ष में कर लो। तब इन्द्र ने कुरु के पास जाकर कहा कि कोई भी पशु, पक्षी या मनुष्य निराहार रहकर या युद्ध करके इस स्थान पर मारा जायेगा तो वह स्वर्ग का भागी होगा। ये बात भीष्म, कृष्ण आदि सभी जानते थे, इसलिए महाभारत का युद्ध कुरुक्षेत्र में लड़ा गया।

श्रवण कुमार की कहानी

मातृ और पितृ भक्त श्रवण कुमार की कहानी तो आपने सुनी ही होगी। श्रवण कुमार जैसे पितृभक्त खोजना मुश्किल है। वे अपने अंधे माता-पिता की सेवा पूरी तत्परता से करते थे, उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने देते थे। एक बार माता-पिता ने तीर्थ यात्रा की इच्छा की और वे उन्हें कांवर में बिठाकर तीर्थ यात्रा को चल दिए। बहुत से तीर्थ करा लेने पर एक दिन अचानक उसके मन में यह भाव आया कि पिता-माता को पैदल क्यों न चलाया जाए? उन्होंने कांवर जमीन पर रख दी और उन्हें पैदल चलने को कहा। अंधे माता और पिता पैदल चलने तो लगे पर उन्होंने साथ ही यह भी कहा- बेटा इस भूमि को जितनी जल्दी हो सके पार कर लेना चाहिए। वे तेजी से चलने लगे जब वह भूमि निकल गई तो श्रवणकुमार को माता-पिता के साथ इस तरह का व्यवहार करने पर बड़ा पश्चाताप हुआ और उसने पैरों में गिरकर क्षमा मांगी तथा फिर से दोनों को कांवर में बिठा लिया। उनके अंधे पिता ने कहा- पुत्र इसमें तुम्हारा दोष नहीं। उस भूमि पर किसी समय मय नामक एक असुर रहता था उसने जन्मते ही अपने ही पिता-माता को मार डाला था, उसी के संस्कार उस भूमि में अभी तक बने हुए हैं इसीसे उस क्षेत्र में गुजरते हुए तुम्हें ऐसी बुद्धि उपजी।

कुरुक्षेत्र का महत्व

महाभारत के वनपर्व के अनुसार, कुरुक्षेत्र में आकर सभी लोग पापमुक्त हो जाते हैं और जो ऐसा कहता है कि मैं कुरुक्षेत्र जाऊंगा और वहीं निवास करुंगा। यहां तक कि यहां की उड़ी हुई धूल के कण पापी को परम पद देते हैं। नारद पुराण में आया है कि ग्रहों, नक्षत्रों एवं तारागणों को कालगति से (आकाश से) नीचे गिर पड़ने का भय है, किन्तु वे, जो कुरुक्षेत्र में मरते हैं पुनः पृथ्वी पर नहीं गिरते, अर्थात वे पुनःजन्म नहीं लेते। भगवद्गीता के प्रथम श्लोक में कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र कहा गया है।

कुरुक्षेत्र के क्षेत्र

यहां एक विशाल तालाब है जिसका निर्माण महाभारत काल में ही हुआ था। यहां एक ज्योतिसर नामक स्थान हैं जहां पर श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश दिया था। यहां पर ब्रह्मसरोवर, सन्निहित सरोवर, भद्रकाली मन्दिर, पिहोवा और श्री स्थानेश्वर महादेव मन्दिर व पूण्डरी नामक स्थान प्रसिद्ध है।

महाभारत में व्यूह रचना कितने प्रकार की थी?

महाभारत में आपने सिर्फ चक्रव्यूह का ही नाम सूना होगा। लेकिन महाभारत के युद्ध में कई प्रकार की व्यू रचना का उल्लेख मिलता है। युद्ध को लड़ने के लिए पक्ष या विपक्ष अपने हिसाब से व्यूह रचना करता था। व्यूह रचना का अर्थ है कि किस तरह सैनिकों को सामने खड़ा किया जाए। आसमान से देखने पर यह व्यूह रचना दिखाई देती है। जैसे क्रौंच व्यूह है, तो आसमान से देखने पर क्रौंच पक्षी की तरह सैनिक खड़े हुए दिखाई देंगे। इसी तरह चक्रव्यूह को आसमान से देखने पर एक घूमते हुए चक्र के समान सैन्य रचना दिखाई देती है। आओ जानते हैं कुछ खास व्यूह रचना के बारे में।

गरुड़ व्यूह: गरुड़ पक्षी का चित्र तो देखा ही होगा आपने। यह विशालकाय पक्षी भगवान विष्णु का वाहन है। युद्ध में सैनिकों को विपक्षी सेना के सामने इस तरह पंक्तिबद्ध खड़ा किया जाता है कि जिससे आसमान से देखने पर गरुढ़ पक्षी जैसी आकृति दिखाई दे। इसे ही गरुड़ व्यूह कहते हैं। महाभारत में इस व्यूह की रचना भीष्म पितामह ने की थी।

क्रौंच व्यूह: क्रौंच सारस की एक प्रजाति है। इस व्यूह का आकार इसी पक्षी की तरह होता था। महाभारत में इस व्यूह की रचना युधिष्ठिर ने की थी।

मकरव्यूह: प्राचीन काल में मकर नाम का एक जलचर प्राणी होता है। मकर का सिर तो मगरमच्छ की तरह लेकिन उसके सिर पर बकरी के सींगों जैसे सींग होते थे, मृग और सांप जैसा शरीर, मछली या मोर जैसी पूंछ और पैंथर जैसे पैर दर्शाए भी होते थे। वैदिक साहित्य में अक्सर तिमिंगिला और मकर का साथ-साथ जिक्र होता है। लेकिन संभवतः यहां व्यूह रचना से तात्पर्य मगर से होगा मकर से नहीं। महाभारत में इस व्यूह की रचना कौरवों ने की थी। >

कछुआ व्यूह: इसमें सेना को कछुए की तरह जमाया जाता है।

अर्धचंद्राकार व्यूह: अर्ध चंद्र का अर्थ तो आप समझते ही हैं। सैन्य रचना जब अर्ध चंद्र की तरह होती थी तो उसे अर्धचंद्राकार व्यूह रचना कहते थे। इस व्यूह की रचना अर्जुन ने कौरवों के गरुड़ व्यूह के प्रत्युत्तर में की थी।

मंडलाकार व्यूह: मंडल का अर्थ गोलाकार या चक्राकार होता है। इस व्यूह का गठन परिपत्र रूप में होता था। महाभारत में इस व्यूह की रचना भीष्म पितामह ने की थी। इसके प्रत्युत्तर में पांडवों ने व्रज व्यूह की रचना कर इसे भेद दिया था।

चक्रव्यूह: चक्रव्यूह को आसमान से देखने पर एक घूमते हुए चक्र के समान सैन्य रचना दिखाई देती है। इस चक्रव्यूह को देखने पर इसमें अंदर जाने का रास्ता तो नजर आता है, लेकिन बाहर निकलने का रास्ता नजर नहीं आता। आपने स्पाइरल देखा होगा बस उसी तरह का यह होता है। महाभारत में इस व्यूह की रचना गुरु द्रोण ने की थी।

चक्रशकट व्यूह: महाभारत युद्ध में अभिमन्यु की निर्मम हत्या के बाद अर्जुन ने शपथ ली थी कि जयद्रथ को कल सूर्यास्त के पूर्व मार दूंगा। तब गुरु द्रोणाचार्य ने जयद्रथ को बचाने के लिए इस व्यूह की रचना की थीं। लेकिन भगवान श्रीकृष्ण की चतुराई से जयद्रथ उस व्यूह से निकलकर बाहर आ गया और मारा गया।

वज्र व्यूह: वज्र एक तरह का हथियार होता है। ये दो प्रकार का होता था- कुलिश और अशानि। इसके ऊपर के तीन भाग तिरछे-टेढ़े बने होते हैं। बीच का हिस्सा पतला होता है। पर यह बड़ा वजनदार होता है। इसका आकार देखने में इन्द्रदेव के वज्र जैसा होता है। महाभारत में इस व्यूह की रचना अर्जुन ने की थी।

औरमी व्यूह: पांडवों के व्रज व्यूह के प्रत्युत्तर में भीष्म ने औरमी व्यूह की रचना की थी। इस व्यूह में पूरी सेना समुद्र के समान सजाई जाती थी। जिस प्रकार समुद्र में लहरें दिखाई देती हैं, ठीक उसी आकार में कौरव सेना ने पांडवों पर आक्रमण किया था।

श्रीन्गातका व्यूह: कौरवों के औरमी व्यूह के प्रत्युत्त में अर्जुन ने श्रीन्गातका व्यूह की रचना की थी। ये व्यूह एक भवन के समान दिखाई देता था। संभवतः इसे ही तीन शिखरों वाला व्यूह कहते होंगे।.इसके अलावा सर्वतोभद्र और सुपर्ण व्यूह का उल्लेख भी मिलता है।

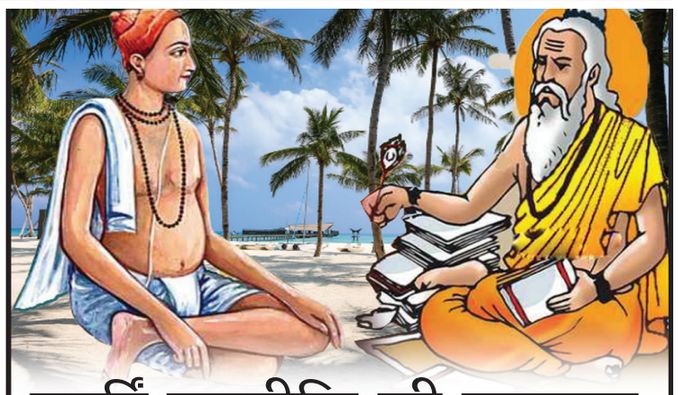

महर्षि वाल्मीकि की रामायण और गोस्वामी तुलसीदास की रामचरितमानस के उत्तर कांड में फर्क क्यूं?

रामायण या रामचरित मानस के उत्तर कांड के संबंध में बहुत लोगों को इस बात का संशय है कि इसमें घटनाओं का वर्णन वैसा नहीं है जैसा कि शोधकर्ता मानते हैं। रामायण और रामचरित मानस दोनों ही का उत्तर कांड बहुत ही भिन्न है। ऐसा क्यों? यह शोध का विषय हो सकता है। रामानंद सागर द्वारा उत्तर कांड के नाम से उत्तर रामायण नाम का सीरियल बनाया गया है। आओ जानते हैं दोनों ही रामायण के काण्ड का फर्क।

वाल्मीकि कृत रामायण का उत्तर कांड

उत्तरकाण्ड में राम के राज्याभिषेक के अनन्तर कौशिकादि महर्षियों का आगमन, महर्षियों के द्वारा राम को रावण के पितामह, पिता तथा रावण का जन्मादि वृत्तान्त सुनाना, सुमाली तथा माल्यवान के वृत्तान्त, रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण आदि का जन्म-वर्णन, रावणादि सभी भाइयों को ब्रह्मा से वरदान-प्राप्ति, रावण-पराक्रम-वर्णन के प्रसंग में कुबेरादि देवताओं का घर्षण, रावण सम्बन्धित अनेक कथाएँ, सीता के पूर्वजन्म रूप वेदवती का वृत्तान्त, वेदवती का रावण को शाप, सहस्त्रबाहु अर्जुन के द्वारा नर्मदा अवरोध तथा रावण का बन्धन, रावण का बालि से युद्ध और बालि की कांख में रावण का बन्धन, सीता-परित्याग, सीता का वाल्मीकि आश्रम में निवास, निमि, नहुष, ययाति के चरित, शत्रुघ्न द्वारा लवणासुर वध, शंबूक वध तथा ब्राह्मण पुत्र को जीवन प्राप्ति, भार्गव चरित, वृत्रासुर वध प्रसंग, किंपुरुषोत्पत्ति कथा, राम का अश्वमेध यज्ञ, वाल्मीकि के साथ राम के पुत्र लव कुश का रामायण गाते हुए अश्वमेध यज्ञ में प्रवेश, राम की आज्ञा से वाल्मीकि के साथ आयी सीता का राम से मिलन, सीता का रसातल में प्रवेश, भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न के पुत्रों का पराक्रम वर्णन, दुर्वासा-राम संवाद, राम का सशरीर स्वर्गगमन, राम के भ्राताओं का स्वर्गगमन, तथा देवताओं का राम का पूजन विशेष आदि वर्णित है।

तुलसीदास गोस्वामी कृत रामचरितमानस का उत्तर कांड

इसमें मंगलाचरण, भरत विरह तथा भरत-हनुमान मिलन, अयोध्या में आनंद, श्री रामजी का स्वागत, भरत मिलाप, सबका मिलनानन्द, राम राज्याभिषेक, वेदस्तुति, शिवस्तुति, वानरों की और निषाद की विदाई, रामराज्य का वर्णन, पुत्रोत्पति, अयोध्याजी की रमणीयता, सनकादिका आगमन और संवाद, हनुमानजी के द्वारा भरतजी का प्रश्न और श्री रामजी का उपदेश, श्री रामजी का प्रजा को उपदेश (श्री रामगीता), पुरवासियों की कृतज्ञता, श्री राम-वशिष्ठ संवाद, श्री रामजी का भाइयों सहित अमराई में जाना, नारदजी का आना और स्तुति करके ब्रह्मलोक को लौट जाना, शिव-पार्वती संवाद, गरुड़ मोह, गरुड़जी का काकभुशुण्डि से रामकथा और राम महिमा सुनना, काकभुशुण्डि का अपनी पूर्व जन्म कथा और कलि महिमा कहना, गुरुजी का अपमान एवं शिवजी के शाप की बात सुनना, रुद्राष्टक, गुरुजी का शिवजी से अपराध क्षमापन, शापानुग्रह और काकभुशुण्डि की आगे की कथा, काकभुशुण्डिजी का लोमशजी के पास जाना और शाप तथा अनुग्रह पाना, ज्ञान-भक्ति-निरुपण, ज्ञान-दीपक और भक्ति की महान महिमा, गरुड़जी के सात प्रश्न तथा काकभुशुण्डि के उत्तर, भजन महिमा, रामायण माहात्म्य, तुलसी विनय और फलस्तुति और रामायणजी की आरती का वर्णन मिलता है। वाल्मीकि कृत उत्तर कांड में राम के रावण वध की आगे की गाथा का वर्णन है, जिसमें राम का राज्याभिषेक, सीता परित्याग, वाल्मीकि आश्रम में लव और कुश का जन्म, बचपन और सीता का जीवन। शत्रुघ्न द्वारा लवणासुर का वध और इसके अलावा पूर्व के ऋषि मुनियों और राजाओं की गाथा का वर्णन मिलेगा। दूसरी ओर गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित मानस में शिव और पार्वती का रामकथा के संबंध में संवाद, काकभुशुण्डि और गरुढ़ संवाद सहित ज्ञान और उपदेश की बातें ही ज्यादा हैं। इसमें सीता परित्याग और लव एवं कुश के बारे में उल्लेख नहीं मिलता है। विद्वान लोग मानते हैं कि ऋषि वाल्मीकि राम के समकालीन थे और गोस्वामी तुलसीदास राम के भक्त थे। यदि प्रमाण की बात सामने आए तो वाल्मीकि रामायण को ही प्रमाण मानना चाहिए, क्योंकि वही सही रामायण है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस को लिखने के पूर्व वाल्मीकि कृत रामायण सहित दक्षिण भारत की रामायण को भी पढ़ा था। अतः उन्होंने सभी को पढ़कर लिखा जबकि वाल्मीकि ने राम के जीवन को देखकर रामायण को लिखा था।

अश्वमेध यज्ञ क्या होता है, खास बातें

अश्वमेध यज्ञ को कुछ विद्वान एक राजनीतिक और कुछ विद्वान इसे आध्यात्मिक प्रयोग मानते हैं। कहा जाता है कि इसे वही सम्राट कर सकता था, जिसका अधिपत्य अन्य सभी नरेश मानते थे। कालांतर में यह यज्ञ जो नरेश जिस समाज से संबंध रखता था उस समाज की रीति के अनुसार करता था। इसके कारण इस यज्ञ को करने में कई बुरी परंपराएं भी जुड़ गई। वैदिक रीति से किया गया यज्ञ ही धर्मसम्मत माना गया है। यज्ञ का प्रारम्भ बसन्त अथवा ग्रीष्म में होता था तथा इसके पूर्व प्रारम्भिक अनुष्ठानों में प्रायः एक वर्ष का समय लगता था। इस बीच नगर में कई सांस्कृतिक कार्यक्रम और उत्सव होते थे। यज्ञ करने के बाद अश्व को स्वतन्त्र विचरण करने के लिए छोड़ दिया जाता था। जिसके पीछे यज्ञकर्ता राजा की सेना होती थी। जब यह अश्व दिग्विजय यात्रा पर जाता था तो स्थानीय लोग इसके पुनरागमन की प्रतिक्षा करते थे। इस अश्व के चुराने या इसे रोकने वाले नरेश से युद्ध होता था। यदि यह अश्व खो जाता तो दूसरे अश्व से यह क्रिया पुनः आरम्भ की जाती थी। कहते हैं कि अश्वमेध यज्ञ ब्रह्म हत्या आदि पापक्षय, स्वर्ग प्राप्ति एवं मोक्ष प्राप्ति के लिए भी किया जाता था। कुछ विद्वान मानते हैं कि अश्वमेध यज्ञ एक आध्यात्मिक यज्ञ है जिसका संबंध गायत्री मंत्र से जुड़ा हुआ है। श्रीराम शर्मा आचार्य कहते हैं कि 'अश्व' समाज में बड़े पैमाने पर बुराइयों का प्रतीक है और 'मेधा' सभी बुराइयों और अपनी जड़ों से दोष के उन्मूलन का संकेत है। जहां भी इन अश्वमेध यज्ञ का प्रदर्शन किया गया है, उन क्षेत्रों में अपराधों और आक्रामकता की दर में कमी का अनुभव किया है। अश्वमेध यज्ञ पारिस्थितिकी संतुलन के लिए और आध्यात्मिक वातावरण की शुद्धि के लिए गायत्री मंत्र से जुड़ा है। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद अश्वमेध प्रायः बन्द ही हो गया।

क्या कर्ण के वैवस्वत मनु यमराज और शनिदेव भाई थे?

हिन्दू पुराण और महाभारत में कई रहस्य छिपे हुए हैं। उन्हें जानना और समझने बहुत ही कठिन है। पुराणों के जानकार मानते हैं कि वैवस्वत मनु, यमराज और शनिदेव और महाभारत के कर्ण भाई भाई थे।

वैवस्वत मनु और यमराज

विश्वकर्मा की पुत्री संज्ञा विवस्वान अर्थात सूर्य की पत्नी हुई। उसके गर्भ से सूर्य ने तीन संतानें उत्पन्न की। जिनमें एक कन्या और दो पुत्र थे। सबसे पहले प्रजापति श्राद्धदेव, जिन्हें वैवस्वत मनु कहते हैं, उत्पन्न हुए। तत्पश्चात यम और यमुना- ये जुड़वीं संतानें हुईं।

शनिदेव

भगवान सूर्य की तूसरी पत्नी छाया थीं। छाया को संज्ञा की छाया ही माना जाता था। छाया से ही शनिदेव का जन्म हुआ था।

कर्ण : सूर्य पुत्र कर्ण को महाभारत का एक महत्वपूर्ण योद्धा माना जाता है। कर्ण के धर्मपिता तो पांडु थे, लेकिन पालक पिता अधिरथ और पालक माता राधा थी। राजा शूरसेन की पुत्री कुंती अपने महल में आए महात्माओं की सेवा करती थी। एक बार वहां ऋषि दुर्वासा भी पधारे। कुंती की सेवा से प्रसन्न होकर दुर्वासा ने कहा, 'पुत्री! मैं तुम्हारी सेवा से अत्यंत प्रसन्न हुआ हूं अतः तुझे एक ऐसा मंत्र देता हूं जिसके प्रयोग से तू जिस देवता का स्मरण करेगी वह तत्काल तेरे समक्ष प्रकट होकर तेरी मनोकामना पूर्ण करेगा।' इस तरह कुंती को वह मंत्र मिल गया। एक दिन कुंती के मन में आया कि क्यों न इस मंत्र की जांच कर ली जाए। कहीं यह यूं ही तो नहीं? तब उन्होंने एकांत में बैठकर उस मंत्र का जाप करते हुए सूर्यदेव का स्मरण किया। उसी क्षण सूर्यदेव प्रकट हो गए। कुंती हैरान-परेशान अब क्या करें?

सूर्यदेव ने कहा, 'देवी! मुझे बताओ कि तुम मुझसे किस वस्तु की अभिलाषा करती हो। मैं तुम्हारी अभिलाषा अवश्य पूर्ण करूंगा।' इस पर कुंती ने कहा, 'हे देव! मुझे आपसे किसी भी प्रकार की अभिलाषा नहीं है। मैंने मंत्र की सत्यता परखने के लिए जाप किया था।' कुंती के इन वचनों को सुनकर सूर्यदेव बोले, 'हे कुंती! मेरा आना व्यर्थ नहीं जा सकता। मैं तुम्हें एक अत्यंत पराक्रमी तथा दानशील पुत्र देता हूं।' इतना कहकर सूर्यदेव अंतर्ध्यान हो गए।

कर्ण के अन्य भाई

कुंति पुत्र कर्ण एक महान योद्ध था जो कौरवों की ओर से लड़ा था। कुंती श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव की बहन और भगवान कृष्ण की बुआ थीं। कुंति का पुत्र होने के कारण कर्ण भगवान श्री कृष्ण का भाई था। इसके अलावा पांचों पांडव भी कर्ण के भाई ही थे।

हॉस्टल अधीक्षक 1 लाख रिश्वत लेते पकड़ाया : 10 दिन बाद भी सस्पेंड नहीं, पैसों से जुड़े कागजातों को गायब करने की आशंका

नीमच । नीमच के उत्कृष्ट सीनियर बॉयज हॉस्टल के अधीक्षक हरीश चौहान को लोकायुक्त पुलिस ने 1 लाख की घूस लेते रंगे हाथ गिरफ्तार किया था। इस कार्रवाई को सोमवार को 10 दिन बीत चुके हैं, लेकिन आदिम जाति कल्याण विभाग ने आरोपी अधीक्षक को अब तक सस्पेंड नहीं किया है।

विभाग के इस ढीले रवैये पर अब गंभीर सवाल उठ रहे हैं, क्योंकि यही विभाग छोटी-मोटी गलतियों पर भी अधीक्षकों को तुरंत सस्पेंड कर देता है। लोकायुक्त उज्जैन की टीम ने हरीश चौहान को 25 जून को जिला संयोजक कार्यालय से रिश्वत लेते हुए दबोचा था। इसके बाद, 1 जुलाई को विभाग ने उन्हें हटाने और कॉलेज हॉस्टल के अधीक्षक चंद्रशेखर राठौर को अतिरिक्त प्रभार सौंपने का आदेश जारी किया।

10 दिन बाद छोड़ा पद, सबूत मिटाने का शक - विभागीय आदेश होने के बावजूद हरीश चौहान कई दिनों तक अपनी कुर्सी पर जमे रहे और सोमवार सुबह ही उन्होंने अपना चार्ज नए अधीक्षक को सौंपा। चार्ज सौंपने में हुई इस देरी ने विभाग के काम करने के तरीके पर शक पैदा कर दिया है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि इस 10 दिन की देरी का फायदा उठाकर हॉस्टल के रिकॉर्ड, पैसों से जुड़े कागजातों और स्टोर के सामान में हेरफेर की गई है, ताकि पुराने घपलों को छुपाया जा सके।

7 साल से चल रहा था वसूली का 'सिंडिकेट' - विभागीय सूत्रों के मुताबिक, आदिम जाति कल्याण विभाग के पूर्व जिला संयोजक राकेश राठौर और आरोपी अधीक्षक हरीश चौहान का एक 'सिंडिकेट' पिछले 7 सालों से एक्टिव था। आरोप है कि यह गुट दूसरे अधीक्षकों के खिलाफ झूठी शिकायतें करवाकर उन्हें डराता था और फिर जिला दफ्तर बुलाकर उनसे मोटी वसूली करता था।

इस सिंडिकेट ने विभाग के 7 अधीक्षकों से प्रमोशन की फाइलें आगे बढ़ाने के बदले 25-25 हजार वसूले थे। इसके अलावा, तबादलों के बाद कटे हुए वेतन को जारी कराने, छोटे कर्मचारियों की तनख्वाह क्लियर कराने और ट्रांसफर होने के बाद भी पुरानी जगह पर रोके रखने के लिए मोटी रकम ली गई थी। आरोपी अधीक्षक हरीश चौहान साथी कर्मचारियों पर धौंस जमाता था कि वह राकेश राठौर को उज्जैन का डिप्टी कमिश्नर बनवाकर लाएगा और फिर विरोध करने वालों की नौकरी खा जाएगा। हरीश चौहान का विवादों से पुराना नाता रहा है। इससे पहले एक गर्ल्स हॉस्टल की दो नाबालिग लड़कियों ने उन पर एट्रोसिटी की शिकायत दर्ज कराई थी, लेकिन राजनैतिक पहुंच के चलते वह बच निकला।

इथेनॉल नीति से बढ़ीं वाहन चालकों की मुश्किलें कांग्रेस ने उठाए पेट्रोल की कीमतों पर सवाल

नीमच। पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण और ईंधन की कीमतों को लेकर जिला कांग्रेस अध्यक्ष तरुण बाहेती ने केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने आरोप लगाया कि बिना पर्याप्त तैयारी के लागू की गई इथेनॉल मिश्रण नीति से पुराने वाहनों में लगातार तकनीकी दिक्कतें आ रही हैं, जबकि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट के बावजूद पेट्रोल-डीजल के दाम कम नहीं किए जा रहे हैं।

बाहेती ने कहा कि सरकार ने इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल को बढ़ावा देने से पहले करोड़ों पुराने वाहनों की अनुकूलता और आम लोगों की परेशानियों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया। उनका दावा है कि जिले में भी वाहन मालिकों से लगातार शिकायतें मिल रही हैं कि इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल के उपयोग के बाद वाहनों का माइलेज घटा है, मेंटेनेंस खर्च बढ़ा है और कई बार गाड़ियां बीच रास्ते में बंद हो रही हैं।

उन्होंने कहा कि सरकार का तर्क है कि इथेनॉल मिश्रण से तेल आयात पर निर्भरता कम होगी, लेकिन इसका आर्थिक लाभ आम उपभोक्ताओं तक नहीं पहुंच रहा है। बाहेती के अनुसार, यदि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चा तेल सस्ता हुआ है तो उसका फायदा भी जनता को पेट्रोल-डीजल की कीमतों में राहत के रूप में मिलना चाहिए।

जिलाध्यक्ष ने सवाल उठाया कि जब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट आई है तो देश में ईंधन के दामों में कमी क्यों नहीं की गई। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग तर्क देकर कीमतें कम करने से बच रही है।

नीमच से भी सामने आ रहीं शिकायतें - बाहेती ने कहा कि नीमच जिले के कई वाहन मालिकों ने इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल के कारण वाहनों में बार-बार खराबी आने, माइलेज कम होने और मरम्मत का खर्च बढ़ने की शिकायत की है। उन्होंने मांग की कि सरकार आम उपभोक्ताओं को सामान्य पेट्रोल का विकल्प भी उपलब्ध कराए और इथेनॉल मिश्रण से जुड़ी शिकायतों की स्वतंत्र जांच कराई जाए। उन्होंने कहा कि जब तक देश के अधिकांश वाहन पूरी तरह इथेनॉल मिश्रित ईंधन के अनुकूल नहीं हो जाते, तब तक मिश्रण की मात्रा नहीं बढ़ाई जानी चाहिए। साथ ही कच्चे तेल की कीमतों में आई गिरावट के अनुरूप पेट्रोल-डीजल के दाम घटाकर जनता को राहत देने की मांग भी की।

अमरनाथ गुफा में शिवलिंग पूरी तरह पिघला

अभी यात्रा के 5 दिन ही हुए, करीब 3 लाख से ज्यादा श्रद्धालुओं का दर्शन करना बाकी

श्रीनगर । अमरनाथ गुफा में प्राकृतिक बर्फ का शिवलिंग लगभग पूरी तरह पिघल गया है। अभी यात्रा के पांच दिन ही बीते हैं। 57 दिन चलने वाली यात्रा 3 जुलाई से शुरू हुई थी। यात्रा के पहले चार दिनों में करीब 86 हजार श्रद्धालुओं ने पवित्र गुफा में दर्शन किए। अधिकारियों के अनुसार, मंगलवार को पांचवें दिन यह संख्या 1 लाख के पार पहुंचने की उम्मीद है। यात्रा के लिए इस साल 4 लाख श्रद्धालुओं ने रजिस्ट्रेशन कराया है। यानी कि अभी 3 लाख से ज्यादा श्रद्धालुओं का दर्शन करना बाकी है।

राम मंदिर चढ़ावा चोरी के नाम पर साइबर फ्रॉड, इंदौर में कई लोगों के पास आ रहे कॉल

इन्दौर । देशभर में चर्चित राम मंदिर चोरी मामले को अब साइबर ठगों ने जालसाजी का नया हथियार बना लिया है। अपराधी लोगों को फोन और वीडियो कॉल कर खुद को पुलिस, सीबीआई, ईडी, साइबर सेल या अन्य जांच एजेंसियों का अधिकारी बताकर डरा रहे हैं। ऐसे ही मामले मध्य प्रदेश के इंदौर में सामने आ रहे हैं लोगों से कहा जा रहा है कि, उनका मोबाइल नंबर, बैंक खाता या आधार कार्ड राम मंदिर चोरी मामले की जांच में सामने आया है। इसके बाद 'डिजिटल अरेस्ट' का डर दिखाकर बैंक खाते की जानकारी, ओटीपी और रकम दूसरे खाते में ट्रांसफर कराने की कोशिश की जा रही है। राहत की बात ये है कि, इंदौर में अब तक इस तरह की ठगी का कोई मामला दर्ज नहीं हुआ है, लेकिन शहर के कई लोगों के पास ऐसे फर्जी कॉल पहुंच चुके हैं। इसे देखते हुए राज्य साइबर सेल ने एडवाइजरी जारी कर लोगों से सतर्क रहने की अपील की है। साइबर सेल के अधिकारियों का कहना है कि ठग किसी भी चर्चित घटना को आधार बनाकर लोगों में डर पैदा करते हैं। इससे पहले कोर्ट, ईडी, सीबीआई, ड्रग्स पार्सल और मनी लॉन्ड्रिंग के नाम पर भी इसी तरह की ठगी की जा चुकी है। अब राम मंदिर चोरी मामले का नाम लेकर लोगों को निशाना बनाया जा रहा है। ठग सबसे पहले खुद को किसी जांच एजेंसी का अधिकारी बताकर फोन करते हैं। इसके बाद वीडियो कॉल पर फर्जी पहचान पत्र और वर्दी दिखाकर भरोसा जीतने की कोशिश करते हैं। फिर दावा करते हैं कि जांच में पीड़ित के आधार कार्ड का मनी लॉन्ड्रिंग में इस्तेमाल किया गया है। मामले से बचने के नाम पर बैंक खाते की जांच की बात कहकर खाते की जानकारी, ओटीपी और पैसे ट्रांसफर कराने का दबाव बनाया जाता है। साइबर सेल ने स्पष्ट किया है कि 'डिजिटल अरेस्ट' जैसी कोई कानूनी प्रक्रिया भारत में नहीं है। कोई भी सरकारी एजेंसी फोन या वीडियो कॉल पर किसी व्यक्ति को हिरासत में नहीं लेती और न ही जांच के नाम पर पैसे किसी खाते में जमा कराने के निर्देश देती है।

RBS GROUP OF INSTITUTION
कॉलेज कैम्पस : हर्कियाखाल चौराहा, मंदसौर रोड़, नीमच (म.प्र.)
Ph. (07423) 268268-69-70, M.9425922520, 7869587202, 7694015501 7694015502
NURSING (नर्सिंग) | MGMT & COMMERC | Computer & IT | SOCIAL WORK | PHARMACY
GNM (नर्सिंग) BBA | BCA | MSW | D. PHARMA
B.Sc. (नर्सिंग) MBA | B.Sc. (cs) | EDUCATION
M.Sc. (नर्सिंग) B.Com (plain) | DCA
P.B. B.Sc. (नर्सिंग) B.Com. (Compu.) | PGDCA | D.Ed B.Ed
SC/ST/OBC वर्ग के विद्यार्थियों को शासकीय नियमानुसार छात्रवृत्ति

RRM Group of Institution
Radhadevi Ramchandra Mangal Group of Institutions
100% Placement | Courses Offered - | Bus Facility Available
BBA, BCA, B.Com, ITI (Electrician/Fitter), B.Sc. Plain
B.Sc Micro Biology, B.Sc. (CS), B.Sc Seed Technology
B.Sc Agriculture, B.Ed, D.Ed, MBA, MSW
Bhatkheda, Mhow-Neemuch Road, Near Neemuch By Pass
Mob. 9406837863, 9424899978, 9425328392

SHRI S.R. GROUP OF COLLEGES
Admission Open 2025-26
धर्मेश तिवारी Director
निरंजन (राजू) तिवारी पूर्व अध्यक्ष - कृषि उपज मंडी समिति, नीमच
MBA 2 Year | B.Pharma 4Year | D.Pharma 2 Year
B.Ed. 2 Year | D.Ed./STC 2 Year | B.Sc. B.Ed. 4 Year | B.A. B.Ed. 4 Year
Singoli Road, Newad, Neemuch (M.P.) City Office : Indira Nagar, PG College Road, Neemuch (M.P.)
8817326635, 8109927774 shrisrcollege collegesr90@gmail.com

श्री देव वेल्डिंग वर्कस
आवश्यकता है
वर्कशॉप पर काम करने के लिए
वेल्डर, फिटर और हेल्पर
की तुरंत आवश्यकता है
संपर्क करें:
मदन माली - 9669999779
राजमल गायरी - 9926640630
पता: स्टेशन रोड, चर्च के पास, नयागांव-नीमच
पता: स्टेशन रोड, चर्च के पास, नयागांव-नीमच

GYANODAYA UNIVERSITY & GROUP OF INSTITUTES NEEMUCH (M.P.)
27,000+ Alumni | CELEBRATING 24 years
Admission Announcement 2026-27
A Leading & Premier University in the Serenity of Neemuch
Vibrant Campus Life with 9000+ Currently Enrolled Students
Highest Package ₹12.75 Lac
730 Placement Offers For Graduates of 2026 as on 5th April 2026
Average Package ₹4.75 Lac
220+ Recruitment Partners
Courses Offered
Pharmacy: D.Pharm, B.Pharm, M.Pharm
Nursing: B.Sc. Nursing, GNM Nursing, Post Basic Nur.
Management: BBA, MBA, B.Com, M.Com
Engineering: B.Tech (CSE, Elect., Mech, Civil,Fire & Safety), M.Tech (CSE/REM/ Energy Tech)
Comp. Science: BCA, MCA, B.Sc.(CS), M.Sc.(CS), DCA/PGDCA
Paramedical: BPT, BMLT, DMLT, OT/X-Ray
Agriculture: B.Sc.(Ag), M.Sc. (Agronomy) (Horticulture)
Education: B.Ed., D.Ed., BA B.Ed.*, B.Sc. B.Ed*
Polytechnic: Electrical, Mechanical, Civil, Comp. Sci.
ITI: Electrician, Fitter, COPA
Science: B.Sc. (PCMBZ/Biotech/ Microbio/CS), M.Sc. (Maths/CS/Chemistry/ Physics/Bio.)
Social Work: BSW, MSW
Lib. Science: B.Lib., M.Lib.
Art & Humanities: BA (Plain/ Journalism & mass communication), MA (Hindi/Eng./Psyco./Sociology Political Sci./Eco./Education)
Hotel Mgmt: BHMCT, Hotel Mgmt
Hospital Mgmt: MBA in Hospital & Health Care Management
Ph.D: All Subjects
Diploma Courses: YOGA | Beauty & Wellness, Diet. & Nut. | Fitness Mgmt
For Admission & Enquiry
Gram: Kanawati, Neemuch (M.P.) Call: 9827550959, 7771001344
www.gyanodayauniversity.ac.in | www.gyanodayanmh.in

12th के बाद सफर जोश का मंजिल कामयाबी की
MPPSC, SSC, BANK
रेलवे, पुलिस की तैयारी कीजिए
और डिप्टी कलेक्टर, तहसीलदार, वाणिज्यिक कर अधिकारी, SP, DSP, CID इंस्पेक्टर, CBN इंस्पेक्टर, असिस्टेंट कमाण्डेंट, इन्कम टेक्स इंस्पेक्टर, सब इंस्पेक्टर, बैंक क्लर्क, PO, मैनेजर आदि बनिये
सोनी कोचिंग क्लासेस ™ ISO 9001 : 2008 Certified
22 वर्षों का अनुभव। 1200 से अधिक छात्रों को नौकरी दिला चुके हैं।
धनीराम सगर मार्केट, गायत्री मंदिर के पास, भागेश्वर मंदिर रोड, नीमच मो. 9300905061

आज ही बुक करें अपना Zelo इलेक्ट्रिक स्कूटर, घर ले जाए
मात्र रु 45990/- रु 41,990/-
में वो भी 1 साल की बैटरी वारंटी के साथ
मात्र रू.41,990/- से इलेक्ट्रिक स्कूटर की रेंज से शुरु ...
INTRODUCING KNIGHT+
#BuiltToPerform
RTO मॉडल मात्र
रु 81000/- रु 76000/-*
(माइलेज 80-100 कि.मी.)
3 साल बैटरी की वारंटी के साथ
Zelo Electric Scooter
बंगला नं. 23, IDBI बैंक के सामने, Lic रोड़, नीमच (म.प्र.)
मो. 9407423999, 8770664866

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक ऐश्वर्य शर्मा के लिए माँ भगवती प्रिन्टर्स बंगला नं. 23, आईडीबीआई बैंक के सामने, नीमच, जिला-नीमच, मध्यप्रदेश से मुदित एवं प्रकाशित। सम्पर्क: 9407423966। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र नीमच होगा।